रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर

हिन्दी को अपने आचरण में उतारने से ही बढ़ेगी इसकी उपयोगिताः कुलपति प्रो. मिश्र

हिंदी दिवस पर ऑनलाईन कार्यक्रम का आयोजन

जबलपुर 14 सितम्बर। पराधीनता किसी भी रूप में हो वह विकास को अवरुद्ध कर देती है। वह चाहे संविधान के रूप में हो या भाषा के रूप में। भारतवर्ष में भाषा की पराधीनता की बेड़ी को हमारी मातृभाषा हिन्दी ही काट पाई है, हमें अपनी भाषा पर गर्व है और उसे सभी को अपने आचरण में लाना चाहिए तभी इसकी उपयोगिता बढ़ेगी। ये विचार माननीय कुलपति प्रो. कपिल देव मिश्र ने सोमवार को रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय में आयोजित हिन्दी दिवस पर ऑनलाईन कार्यक्रम में अध्यक्षीय आसंदी से व्यक्त किए।

विश्वविद्यालय के हिंदी एवं भाषा विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित हिंदी दिवस कार्यक्रम में विश्व हिंदी सचिवालय, मारिशस के महासचिव प्रो. विनोद कुमार मिश्र ने हिंदी भाषा को वसुधैव कुटुंबकम अर्थात आध्यात्म की भाषा कहा, जो हम सबको मानवीय संवेदनाओं के साथ जोड़ती है। हिंदी भाषा वह भाषा है जिस पर लोगों का अधिकार है और इसी से भारत का विकास हो रहा है। विश्वग्राम बंधुत्व का भाव तो देता है लेकिन वह बंधन मुक्त व्यापार को परिभाषित करता है वहां भी हमारी हिंदी व्याप्त हो गई है।

अधिक से अधिक हो हिन्दी का प्रयोग–

ऑनलाईन कार्यक्रम में कला संकाय अध्यक्ष एवं हिंदी विभाग के अध्यक्ष प्रो. धीरेंद्र पाठक ने अतिथियों का वाचिक स्वागत करते हुए हिंदी दिवस मनाए जाने के विषय में प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि हिंदी बॉलीवुड, पत्रकारिता व अन्यान्य आयाम के माध्यम से अपने विकास के चरम को छू रही है। हिंदी किसी एक दिन के लिए नहीं बल्कि पूरे वर्ष प्रयोग करने योग्य है। विधि के छात्र अरुण शर्मा ने हिंदी की संविधान में स्थिति का वर्णन किया। गूगल मीट प्लेटफार्म के माध्यम से आयोजित ऑनलाईन कार्यक्रम का संचालन हिन्दी विभाग की डॉ.आशा रानी और आभार प्रदर्शन डॉ. नीलम दुबे द्वारा किया गया। इस अवसर पर डॉ. सीमा दीक्षित, डॉ.विपुला सिंह, डॉ.बिहारी लाल द्विवेदी, डॉ. बालस्वरूप द्विवेदी, डॉ.मीनल दुबे, डॉ.अजय मिश्र, डॉ.अजय शुक्ल, राखी चतुर्वेदी, लक्ष्मी द्विवेदी, विजय बहादुर, शुभम और बड़ी संख्या में विभाग के शोधार्थी शामिल रहे।

समाज, राष्ट्र को स्वर्णिम स्वरूप में देखने के लिए नेतृत्व की अहम् भूमिकाः कुलपति

'आत्मनिर्भर जबलपुर' पर पांच दिवसीय वर्चुअल राष्ट्रीय परिचर्चा का शुभारंभ

जबलपुर। आत्मनिर्भर जबलपुर के लिए जरूरी है कि हमारी सोच पहले आत्मनिर्भर हो। हम पहले अपनी सोच–विचार के लिए आत्मनिर्भर हों, तब हमारा देश भी आत्मनिर्भर जरूर हो जाएगा। समाज, राष्ट्र को स्वर्णिम स्वरूप में देखने के लिए शिक्षण संस्थाओं को प्रत्येक क्षेत्र में नेतृत्व की अहमं भूमिका का निर्वहन करना होगा। सभी के सुझावों का सम्यक समायोजन कर इस कार्य को आगे बढ़ाना होगा। उपरोक्त वक्तव्य माननीय कुलपति प्रो. कपिल देव मिश्र ने विश्वविद्यालय में 'आत्मनिर्भर जबलपुर' पर आयोजित पांच दिवसीय वर्चुअल राष्ट्रीय परिचर्चा के शुभारंभ कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए व्यक्त किए।

रादुविवि के व्यावसायिक अध्ययन एवं कौशल विकास संस्थान एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, महाकौशल प्रांत के संयुक्त तत्वावधान में 'आत्मनिर्भर जबलपुर' विषय पर आयोजित पांच दिवसीय वर्चुअल राष्ट्रीय परिचर्चा के शुभारंभ कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि पाटन क्षेत्र विधायक माननीय श्री अजय विश्नोई ने कहा कि आत्मनिर्भर भारत के लिये साइकोमेट्रिक परीक्षण कर के कैरियर मार्गदर्शन कर उनके विकास की संभावनाओं पर व्ययावसायिक एवं औद्योगिक विकास की तरफ ले जाने की आवश्यकता है। जबलपुर में फूड प्रोसेसिंग, गेहूं फ्लोर मिल, दाल मिल, मटर प्रोसेसिसंग, इंडस्ट्रियल एरिया का विकास, दवाई व्यवसाय, पेंट इंडस्ट्री, गारमेंट इंडस्ट्री, आयरन एवं मारबल खदानें, कार्पोरेट हॉस्पिटल– नर्सिंग क्षेत्र इत्यादि में अपार संभावनाएं हैं। विशिष्ट अतिथि माननीय श्री अशोक रोहाणी, विधायक केन्ट क्षेत्र ने कहा कि आत्मनिर्भर भारत के लिये सभी प्रकार की लधु उद्योग को बढ़ावा देना होगा। उस हेतु हर संभव प्रसास किये जाऐंगे।

युवाओं को प्रेरित होने की आवश्यकता–

वर्चुअल परिचर्चा में मुख्य वक्ता माननीय श्री अतुल कोठारी, राष्ट्रीय सचिव, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली ने कहा कि आत्मनिर्भर भारत की सफलता में युवाओं की भूमिका अहम् है। आपके विचार ही आपको सबसे ज्यादा प्रेरित करते हैं, अपने विचारों को अपनी सफलता का जरिया बनायें, इसकी शुरुआत आप खुद पर भरोसा रखकर अपनी जिम्मेदारियों को निभाकर करें आत्मनिर्भर भारत अभियान को सार्थक करने में युवाओं को प्रशिक्षण, प्रचार एवं पर्याप्त अभिप्रेरणा दिया जाना आज की आवश्यकता है। टीम वर्क एवं कमेटी के निर्माण कर प्रोटक्ट निर्माण, प्रोसेसिंग, एवं मार्केटिंग एवं लधु उद्योग की स्थापना, उनके कौशल के विकास कर आवश्यक रुप से सबको जोडने का कार्य किए जायें तो ही संकल्पता सार्थक होगी।

नवाचारों की श्रृंखला–

स्वागत उद्‌बोधन प्रस्तुत करते हुए विवि कौशल विकास विभाग प्रमुख प्रो. सुरेन्द्र सिंह ने कहा कि कौशल विकास संस्थान नवाचारों की श्रंखला में आत्मनिर्भर जबलपुर की संकल्पना भी शामिल है और इसके लक्ष्य की पूर्ति हेतु सम्मिलित प्रयास किए जा रहे हैं। विषयवस्तु प्रवर्तन एवं वर्चुअल परिचर्चा का संचालन प्रो. राजेन्द्र कुररिया, सहसंयोजक शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, महाकौशल प्रांत द्वारा किया गया। कार्यक्रम में म प्र उद्यमिता विकास केन्द्र के श्री एस.के. कोरी ने भी जानकारी प्रदान की। आभार प्रदर्शन प्रभारी कुलसचिव डॉ. दीपेश मिश्रा ने किया। इस अवसर पर प्रो. राम कुमार रजक सहित विवि कौशल विकास विभाग के डॉ. अजय मिश्रा, डॉ. मीनल दुबे, डॉ. महावीर त्रिपाठी, डॉ. मनोज पाण्डेय सहित अन्य विशिष्टजन एवं प्राध्यापक, अतिथि विद्वान मौजूद रहे।

रादुविवि जनसम्पर्क प्रकोष्ठ/क्रमांक/936/14.09.2020